कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here



1. निम्नलिखित की व्याख्या करें –

(क) ब्रिटेन की महिला कामगारों ने स्पिनिंग जेनी मशीनों पर हमले किये।

उत्तर : बेरोजगारी की आशंका के कारण मजदूर नई प्रौद्योगिकी से चिढ़ते थे।

- जब 1764 में जेम्स–हारग्रीब्ज ने स्पिनिंग –जेनी नामक ऊन कातने की मशीन बनाई तो इस मशीन ने कताई की प्रक्रिया तेज कर दी और मजदूरों की माँग घटा दी।
- एक पहिए को ही घुमाकर एक मजदूर बहुत सारी तकलियों को घुमा देता था और एक साथ कई धागे बनने लगते थे।
- अब जब ऊन उद्योग में इस मशीन का इस्तेमाल शुरू किया गया तो हाथ से ऊन कातने वाली औरतें इस मशीन पर हमला करने लगीं।
- स्पिनिंग जेनी के इस्तेमाल पर यह टकराव लंबे समय तक चलता रहा।

(ख) 17वीं शताब्दी में यूरोपीय शहरों के सौदागर गाँवों में किसानों और कारीगरों से काम करवाने लगे।

उत्तर : 17वीं शताब्दी में यूरोपीय शहरों में सौदागर गाँवों की तरफ रूख करने लगे थे।

- वे किसानों और कारीगरों को पैसे देकर उनसे अंतर्राष्ट्रीय बाजार के लिए उत्पादन करवाते थे।
- उस समय विश्व व्यापार के विस्तार और दुनिया के विभिन्न भागों में उपनिवेशों की स्थापना के कारण चीजों की माँग बढ़ने लगी थी।
- इस माँग को पूरा करने के लिए केवल शहरों में रहते हुए उत्पादन नहीं बढ़ाया जा सकता था।
- एक वजह तो यह थी कि :– शहरों में शहरी दस्तकार एवं व्यापारिक–गिल्ड्स काफी ताकतवर थे।
- ये गिल्ड्स उत्पादकों के संगठन होते थे।
- गिल्ड्स से जुड़े उत्पादक –
  - (i) कारीगरों को प्रशिक्षण देते थे।
  - (ii) इन कारीगरों पर नियंत्रण रखते थे।
  - (iii) प्रतिस्पर्धा और मूल्य तय करते थे।
  - (iv) व्यवसाय में नये लोगों को आने से रोकते थे।
- शासकों ने भी विभिन्न गिल्ड्स को खास उत्पादों के उत्पादन और व्यापार का एकाधिकार दिया हुआ था।
- फलस्वरूप नये व्यापारी शहरों में कारोबार नहीं कर सकते थे। इसलिए वे गाँवों की तरफ जाने लगे।

LET'S LEARN TOGETHER
Download Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

(ग) सूरत बंदरगाह 18वीं सदी के अंत तक हाशिए पर पहुँच गया था।

उत्तर : गुजरात के तट पर स्थित सूरत बंदरगाह के जरिए भारत खाड़ी और लाल सागर के बंदरगाहों से जुड़ा हुआ था।

- इस तट से होने वाले निर्यात व्यापार में बहुत सारे भारतीय व्यापारी तथा बैंकर सक्रिय थे।
- 1790 के दशक तक भारतीय सौदागरों का यह नेटवर्क टूटने लगा।
- अब यूरोपीय कंपनियों की ताकत बढ़ती जा रही थी।
- उन्होंने स्थानीय दरबारों से कई तरह की रियायतें हासिल की और फिर उन्होंने व्यापार पर इजारेदारी अधिकार प्राप्त कर लिया।
- इससे सूरत बंदरगाह कमजोर पड़ गया।
- इससे होने वाले निर्यात में नाटकीय कमी आई।
- पहले जिस कर्जे से व्यापार चलता था वह खत्म होने लगा।
- धीरे धीरे स्थानीय व्यापारी तथा बैंकर दिवालिया हो गए।
- 17वीं सदी के आखिरी सालों में सूरत-बंदरगाह से होने वाले व्यापार का कुल मूल्य 1.6 करोड़ रूपये था।
- 1740 के दशक तक यह गिर कर केवल 30 लाख रूपये रह गया था।
- 18वीं सदी के अंत तक सूरत-बंदरगाह हाशिए पर पहुँच गया था।

(घ) ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत में बुनकरों पर निगरानी रखने के लिए गुमाश्तों को नियुक्त किया था।

उत्तर : 1760 व 1770 के दशकों में बंगाल और कर्नाटक में राजनीतिक सत्ता स्थापित करने से पहले ईस्ट इंडिया कंपनी को निर्यात के लिए लगातार कपड़े की सप्लाई नहीं मिल पाती थी।

- बुने हुए कपड़े को हासिल करने के लिए फ्रांसीसी, डच, पुर्तगालियों के साथ-साथ स्थानीय व्यापारी भी होड़ में रहते थे।
- लेकिन एक बार कंपनी की राजनीतिक सत्ता स्थापित हो जाने के बाद उसने व्यापार पर अपना एकाधिकार करना प्रारंभ किया।
- बुनकरों पर प्रत्यक्ष-नियंत्रण रखने के लिए कंपनी ने वेतन भोगी कर्मचारी 'गुमाश्ता' नियुक्त कर दिए।

इनका कार्य –

(i) बुनकरों पर निगरानी रखना
(ii) माल इकट्ठा करना
(iii) कपड़ों की गुणवत्ता जाँचना था।

- कंपनी बुनकरों को पेशगी रकम देकर माल खरीदती थी।
- जो कर्जा लेते थे उन्हें अपना माल गुमाश्ता को ही देना होता था वे किसी और व्यापारी को नहीं बेच सकते थे।
- लेकिन जल्दी ही गाँवों के बुनकरों और गुमाश्तों के बीच टकराव होने लगे।
- ये दंभपूर्ण व्यवहार करते थे, सिपाहियों और चपरासियों को लेकर जाते थे और माल समय पर तैयार न होने पर बुनकरों को सजा देते थे।
- सजा के तौर पर बुनकरों को पीटा जाता था और कोड़े बरसाये जाते थे।

Download Mission Gyan App

भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

2. प्रत्येक वक्तव्य के आगे 'सही' या 'गलत' लिखें।

(क) 19वीं सदी के आखिर में यूरोप की कुल श्रम शक्ति का 80 प्रतिशत तकनीकी रूप से विकसित औद्योगिक क्षेत्र में काम कर रहा था।

उत्तर : 'गलत'

कारण :- 19वीं सदी के आखिर में यूरोप में तकनीक रूप से विकसित औद्योगिक क्षेत्र में काम करने वाले मजदूरों की संख्या 20 प्रतिशत से ज्यादा नहीं थी।

क्योंकि कपड़ा उद्योग का एक बड़ा हिस्सा कारखानों में नहीं बल्कि घरेलू इकाइयों में काम करता था।

(ख) 18वीं सदी तक महीन कपड़े के अन्तर्राष्ट्रीय बाजार पर भारत का कब्जा था।

उत्तर : 'सही'

- बहुत सारे देशों में मोटा कपास पैदा होता था लेकिन भारत में पैदा होने वाला कपास महीन किस्म का था।
- इस महीन कपास की पूरे विश्व में माँग थी।

स्थल मार्ग से व्यापार :-

- आर्मीनियन और फारसी सौदागर भारत में पंजाब से अफगानिस्तान, पूर्वी फारस और मध्य ऐशिया के रास्ते यहाँ से चीजें लेकर जाते थे।
- ये सौदागर महीन कपड़ों के थान ऊँटों की पीठ पर लादकर पश्चिमोत्तर सीमा से पहाड़ी दर्रों व रेगिस्तानों को पार कर ले जाते थे।

समुद्री व्यापार :-

- गुजरात के तट पर स्थित सूरत बंदरगाह के जरिए भारत खाड़ी और लाल सागर के बंदरगाहों से जुड़ा हुआ था।
- दूसरी तरफ पूर्व में कोरोमंडल तट पर मछलीपट्नम और बंगाल में हुगली के माध्यम से भी दक्षिण पूर्वी एशियाई बंदरगाहों के साथ खूब व्यापार चलता था।
- इस प्रकार से स्थल व जलमार्ग द्वारा 18वीं सदी तक महीन कपड़े के अंतर्राष्ट्रीय बाजार पर भारत का कब्जा था।

(ग) अमेरिकी गृह युद्ध के फलस्वरूप भारत के कपास निर्यात में कमी आई।

उत्तर : 'गलत'

कारण :- जब अमेरिकी गृह युद्ध शुरू हुआ तो अमेरिका से ब्रिटेन में कपास आना बंद हो गया।

- ब्रिटेन को कपास की जरूरत पड़ी तो वह भारत से कपास मँगाने लगा।
- इस प्रकार से भारत के कपास निर्यात में वृद्धि हुई।
- भारतीय कपास की कीमतें रातों-रात आसमान छूने लग गईं थीं।

(घ) 'फ्लाई-शटल' के आने से हथकरघा कामगारों की उत्पादकता में सुधार हुआ।

उत्तर : 'सही'

कारण :- जब लागत कम हो और उत्पादन बढ़ रहा हो तो हाथ से काम करने वाले भी नई तकनीक अपनाने लगते हैं।

- इसलिए 20वीं सदी के दूसरे दशक तक बुनकर फ्लाई शटल वाले करघों का इस्तेमाल करने लगे थे।

Download Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

- यह रस्सियों और पुलियों के सहारे चलने वाली मशीन थी। इसका बुनाई के लिए इस्तेमाल किया जाता था।
- यह क्षैतिज धागों (ताना) को लंबवत धागों (बाना) में पिरो देती है।
- इससे चौड़े अरज का कपड़ा बनाने में मदद मिली।
- इससे बड़े करघे चलाये जा सकते थे।
- इससे कामगारों का उत्पादन बढ़ गया तथा श्रम की माँग में कमी आई।

3. पूर्व-औद्योगकीकरण का मतलब बताऐं।

उत्तर : पूर्व अथवा आदि-औद्योगीकरण :-

- इंग्लैंड और यूरोप में फैक्ट्रियों की स्थापना से भी पहले अंतर्राष्ट्रीय बाजार के लिए बड़े पैमाने पर औद्योगिक उत्पादन होने लगा था।
- यह उत्पादन फैक्ट्रियों से नहीं होता था, बल्कि घरेलू इकाइयों से होता था।
- इतिहासकार औद्योगीकरण के इस चरण को आदि-औद्योगीकरण कहते हैं।

प्रक्रिया :- 17वीं और 18वीं सदी में यूरोपीय शहरों के सौदागर गाँवों की तरफ रूख करने लगे थे।

- गाँवों के गरीब काश्तकार और दस्तकार सौदागरों के लिए काम करते थे।
- यह वह समय था जब यूरोप में खुले खेत खत्म होते जा रहे थे।
- छोटे और गरीब किसान अपनी रोजी रोटी के लिए साझा जमीनों से जलाने की लकड़ी, सब्जियाँ, भूसा और चारा आदि बीनकर काम चला रहे थे।
- बहुतों के पास खेत तो थे पर उनसे घर के सारे लोगों का पेट नहीं भर पा रहा था।
- इस स्थिति में जब सौदागर वहाँ आए और उन्होंने माल पैदा करने के लिए पेशगी रकम दी तो किसान फौरन तैयार हो गए।
- सौदागरों के लिए काम करते हुए वे गाँव में रहते हुए अपने छोटे-छोटे खेतों को भी सँभाल सकते थे।
- इस आमदनी ने उनको बड़ा सहारा दिया।
- अब उन्हें पूरे परिवार के श्रम संसाधनों के इस्तेमाल का मौका भी मिल गया।
- इस व्यवस्था से शहरों और गाँवों के बीच एक घनिष्ठ संबंध विकसित हुए।
- सौदागर रहते तो शहरों में थे लेकिन उनके लिए काम ज्यादातर देहात में होता था।

उदाहरण के तौर पर :-

- इंग्लैंड के कपड़ा व्यवसायी स्टेप्लर्स से ऊन खरीदते थे।
- उसे फिर सूत कातने वालों के पास पहुँचा देते थे।
- इस धागे से बुनकर कपड़ा बनाते थे।
- फिर फुलर्ज इस कपड़े पर सलवटें मिटाने का काम करते थे।
- रंगसाज इस कपड़े को रंगते थे।
- लंदन में कपड़ों की फिनिशिंग होती थी।
- इसके बाद निर्यातक-व्यापारी कपड़े को अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में बेच देते थे।
- अत: इस आदि-औद्योगीकरण में व्यवसायिक आदान-प्रदान होता रहता था।

Download Mission Gyan App

भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here